अब हम इन कार्यों का विस्तृत विवेचन करेंगे।

08-5-20

(I) मुख्य कार्य
(*Primary Functions*)

मुद्रा के मुख्य कार्यों को आधारभूत (Fundamental) अथवा मौलिक (Original) कार्य भी कहते हैं, क्योंकि मुद्रा इन कार्यों को आर्थिक विकास की प्रत्येक अवस्था में करती है। मुद्रा के मुख्य कार्य दो हैं—

1. **विनिमय का माध्यम** (Medium of Exchange)—मुद्रा का प्रमुख कार्य यह है कि यह विनिमय के माध्यम का कार्य करती है। मुद्रा के माध्यम से एक वस्तु का दूसरी वस्तु में सरलतापूर्वक विनिमय किया जा सकता है। वस्तु-विनिमय प्रणाली की एक मुख्य कठिनाई यह थी कि उसमें आवश्यकताओं के दोहरे संयोग का अभाव (Lack of double coincidence of wants) पाया जाता था। मुद्रा ने इस कठिनाई को दूर कर दिया है। आज किसी वस्तु को बेचकर मुद्रा प्राप्त कर ली जाती है और उस मुद्रा से आवश्यकतानुसार बाजार में वस्तुएँ खरीदी जाती हैं। अब विनिमय के लिए दो व्यक्तियों की आवश्यकताओं में संयोग करने की जरूरत नहीं पड़ती। लेकिन विनिमय का माध्यम होने के लिए मुद्रा में सामान्य स्वीकृति (General acceptability) का गुण होना आवश्यक है।

2. **मूल्य का मापक** (Measure of Value)—मुद्रा का दूसरा मुख्य कार्य यह है कि यह मूल्य के मापक का कार्य करती है। वस्तु-विनिमय प्रणाली की एक कठिनाई यह भी थी कि उसके अन्तर्गत दो वस्तुओं के बीच विनिमय के अनुपात को निश्चित करना कठिन था; क्योंकि मूल्य का कोई सामान्य मापक नहीं था। मुद्रा ने इस कठिनाई को भी दूर किया। मुद्रा मापन की इकाई (Unit of Account) का कार्य करती है। जिस प्रकार दूरी को मीटर से, वजन को किलोग्राम तथा तापमान को थर्मामीटर से मापा जाता है, उसी प्रकार वस्तुओं के मूल्य को मुद्रा से मापा जाता है। इस प्रकार मुद्रा मूल्य के मापक का कार्य करती है।

(II) गौण कार्य
(*Secondary Functions*)

मुद्रा के मुख्य कार्य आर्थिक विकास की प्रत्येक अवस्था में उत्पन्न होते हैं; लेनिक इसके गौण कार्य कम महतत्त्वपूर्ण हैं और आर्थिक विकास की कुछ प्रगति के बाद ही ये उत्पन्न होते हैं। मुद्रा के गौण कार्य निम्नलिखित हैं—

3. **विलम्बित भुगतान का मान** (Standard of Deferred Payment)—मुद्रा विलम्बित भुगतान के मान का कार्य करती है। वर्त्तमान समय में साख अथवा उधार का बहुत ही महत्त्व है। उधार के लेन-देन का काम मुद्रा के द्वारा किया जाता है और उधार ली गई रकम का भुगतान भविष्य में करना पड़ता है। इसके लिए मुद्रा अधिक उपयुक्त है। वस्तु-विनिमय प्रणाली में वस्तु के रूप में उधार देने में कठिनाइयाँ थीं, लेकिन मुद्रा ने उन कठिनाइयों को दूर कर दिया है। मुद्रा स्थगित या विलम्बित भुगतान के मान का कार्य सफलतापूर्वक इसलिए करती है कि (क) वस्तुओं के मूल्य की भाँति मुद्रा के मूल्य में अत्यधिक परिवर्तन नहीं होता; (ख) मुद्रा सर्वग्राह्य होती है; तथा (ग) मुद्रा में टिकाऊपन का गुण पाया जाता है। मुद्रा की इन्हीं विशेषताओं के चलते यह विलम्बित भुगतान के मान का कार्य सफलतापूर्वक करती है।

4. **मूल्य का संचय** (Store of Value)—मुद्रा का एक प्रमुख कार्य यह है कि यह मूल्य अथवा क्रय-शक्ति के संचय के साधन का कार्य करती है। वस्तु-विनिमय प्रणाली में वस्तुओं को संचय करने में बहुत ही कठिनाइयाँ थीं। लेकिन मुद्रा के आविष्कार ने मूल्य अथवा धन के संचय को सुगम बना दिया है जो पूँजी के निर्माण को सुगम बनाकर आर्थिक विकास के मार्ग को प्रशस्त करता है।

Scanned with CamScanner

वैसे तो मुद्रा के और भी अनेक कार्य हैं, लेकिन मुद्रा के उपर्युक्त चार कार्यों को काफी महत्त्वपूर्ण माना गया है। इन चार कार्यों को प्रायः अंग्रेजी की एक कविता द्वारा निम्न प्रकार से व्यक्त किया जाता है—

Money is a matter of functions four :
A Medium, a measure, a standard, a store.

5. मूल्य का हस्तान्तरण (Transfer of Value)—मुद्रा का एक गौण कार्य यह भी है कि यह मूल्य के हस्तान्तरण का कार्य करती है । विनिमय के विकास के साथ दूर-दूर तक क्रय-विक्रय करने की आवश्यकता पड़ी जिसके लिए क्रय-शक्ति का हस्तान्तरण होना जरूरी था । मुद्रा ने इस कार्य को सुगमतापूर्वक किया । मुद्रा मूल्य के हस्तान्तरण का कार्य करती है, क्योंकि इसके माध्यम से कोई व्यक्ति अपनी क्रय-शक्ति दूसरे को दे सकता है अथवा एक स्थान पर अपनी अचल सम्पत्ति को बेचकर दूसरे स्थान पर सम्पत्ति खरीद सकता है । मुद्रा के इस कार्य ने आर्थिक विकास में बहुत ही योगदान दिया है ।

(III) आकस्मिक कार्य (Contingent Functions)

उपर्युक्त कार्यों के अतिरिक्त मुद्रा कुछ अन्य कार्य भी करती है जिन्हें मुद्रा के आकस्मिक कार्य करते हैं । किसी देश की आर्थिक प्रगति के साथ-साथ इन कार्यों का महत्त्व बढ़ता जाता है । मुद्रा के आकस्मिक कार्य निम्नलिखित हैं—

6. सामाजिक आय का वितरण (Distribution of Social Income)—मुद्रा सामाजिक आय के वितरण में सहायता प्रदान करती है । किसी देश में उत्पादन के विभिन्न साधनों के सहयोग से जिन वस्तुओं और सेवाओं का उत्पादन होता है उनके कुल योग को राष्ट्रीय आय या राष्ट्रीय लाभांश (National Dividend) कहते हैं । इसी राष्ट्रीय लाभांश का वितरण उत्पादन के साधनों के बीच किया जाता है और इसके लिए मुद्रा सहायक होती है । उत्पादित वस्तुओं और सेवाओं को बेचकर उन्हें मुद्रा के रूप में बदल लिया जाता है । पुनः उत्पादन के साधनों के पारिश्रमिक को मुद्रा की सहायता से आँका जाता है और मुद्रा के ही रूप में पारिश्रमिक का वितरण कर दिया जाता है । इस प्रकार मुद्रा सामाजिक आय अथवा राष्ट्रीय लाभांश के वितरण में सहायता प्रदान करती है ।

7. साख का आधार (Basis of Credit)—वर्त्तमान समय में चेक, ड्राफ्ट, बिल आदि साख-पत्रों का प्रयोग मुद्रा के समान ही होने लगा है । लेकिन इन साख-पत्रों को मुद्रा के आधार पर ही जारी किया जाता है । बैंक जब इन साख-पत्रों को जारी करता है अथवा साख का निर्माण करता है तो इस साख-मुद्रा के पीछे अपने पास एक निश्चित अनुपात में नकद मुद्रा (Cash Reserve) रख लेता है ताकि माँग होने पर साख-मुद्रा को नकद मुद्रा में बदला जा सके । ऐसा करने से बैंक के ऊपर जनता का विश्वास बना रहता है । जारी की गई साख-मुद्रा की मात्रा वास्तव में बैंक द्वारा रखी गयी नकद मुद्रा के कोष पर निर्भर करती है । यदि नकद मुद्रा का कोष अधिक है तो अधिक साख का निर्माण हो सकता है और नकद मुद्रा के कोष में कमी होने से साख की मात्रा भी कम हो जाती है । इस प्रकार मुद्रा साख के आधार का कार्य करती है ।

8. पूँजी या सम्पत्ति को सामान्य रूप प्रदान करना (Giving a General form to Capital)—मुद्रा पूँजी अथवा सम्पत्ति को सामान्य रूप प्रदान करती है । पूँजी का निर्माण बचत पर निर्भर करता है और यह बचत मुद्रा के रूप में ही की जाती है । पुनः मुद्रा के चलते पूँजी में तरलता (Liquidity) और गतिशीलता (Mobility) आती है जिससे पूँजी के विनियोग में सुविधा होती है । इस प्रकार मुद्रा पूँजी को सामान्य रूप देकर पूँजी के संचय एवं विनियोग दोनों को सरल बना देती है ।

9. सीमान्त उपयोगिता तथा सीमान्त उत्पादकता में समानता लाना (Equalisation of Marginal Utility and Marginal Productivity)—मुद्रा से उपभोक्ता एवं उत्पादक दोनों को लाभ है । अधिकतम संतुष्टि प्राप्त करने के लिए उपभोक्ता को अपनी आय को विभिन्न मदों पर इस प्रकार व्यय करना चाहिए कि उसे व्यय की सभी मदों

Scanned with CamScanner

से बराबर सीमान्त उपयोगिता प्राप्त हो । इस कार्य में मुद्रा ही सहायक होती है । पुनः उत्पादक के लिए विभिन्न साधनों से मिलनेवाली सीमान्त उत्पादकता को समान बनाने में मुद्रा सहायक होती है जिससे अधिकतम उत्पादन एवं अधिकतम लाभ प्राप्त होता है ।

10. शोधन-क्षमता की गारन्टी (Guarantee of Solvency)—मुद्रा के द्वारा किसी व्यक्ति या फर्म को ऋण-भुगतान करने की क्षमता या शोधन-क्षमता प्राप्त होती है । अतः प्रत्येक फर्म अपनी शोधन-क्षमता (Solvency) को बनाये रखने के लिए पर्याप्त मात्रा में अपने पास मुद्रा रखता है । यदि उसके पास ऋणों को भुगतान करने के लिए पर्याप्त मात्रा में मुद्रा न हो तो उसकी शोधन-क्षमता समाप्त हो जाती है और उसे दिवालिया (Insolvent) घोषित कर दिया जाता है, भले ही उसके पास अन्य सम्पत्ति क्यों न हो । इस प्रकार मुद्रा शोधन-क्षमता की गारन्टी का काम करती है ।

11. सम्पत्ति की तरलता (Liquidity of Property)—मुद्रा सम्पत्ति को तरलता प्रदान करती है । प्रत्येक व्यक्ति अपनी सम्पत्ति के कुछ भाग को तरल रूप में रखना पसन्द करता है और यह तरलता नकद मुद्रा का ही दूसरा नाम है । **प्रो० केन्स** (Keynes) के अनुसार, तरलता की माँग तीन दृष्टिकोणों से की जाती है—(क) लेन-देन की प्रवृत्ति (Transaction Motive) (ख) आकस्मिक घटनाओं के लिए (Precautionary Motive); तथा (ग) सट्टेबाजी की प्रवृत्ति (Speculative Motive) । इस प्रकार मुद्रा का तरल सम्पत्ति के रूप में प्रयोग किया जाता है जो अर्थव्यवस्था के लिये अत्यन्त ही महत्त्वपूर्ण है ।

12. निर्णय का वाहक (Bearer of Option)—**प्रो० ग्राहम** (Prof. Graham) के अनुसार, मुद्रा निर्णय का वाहक होती है । हम जानते हैं कि मुद्रा के रूप में भविष्य के लिए क्रय-शक्ति का संचय किया जाता है ताकि लोग अपनी भविष्य की आवश्यकताओं की पूर्ति कर सकें । प्रत्येक व्यक्ति चाहता है कि वह अपनी इच्छा एवं निर्णय के अनुसार भविष्य में अपने संचित धन का प्रयोग करे । मुद्रा इस सम्बन्ध में व्यक्ति के निर्णय के वाहक का काम करती है, क्योंकि मुद्रा के रूप में धन का संचय कर व्यक्ति भविष्य में अपने निर्णय के अनुसार मनचाहे ढंग से उसे खर्च कर सकता है ।

मुद्रा के इन विभिन्न ...